दिव्यांगों के लिए स्माईल ईयर
दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरुरतमंद परिवारों के लिए
नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है

મંત્ર યુગપરિવર્તક પ. પૂ. સંતશ્રી ઋષિ પ્રિતેશભાઇના
આશિર્વાદ અને માર્ગદર્શનથી શરુ થયેલ...

KRYSTAL DENTAL CARE
MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE
180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015
Clinic : 079 - 48008004

DSD Digital Smile Design

Dr. Shashwat Jain
+91 99786 01890
M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
PGCOI - Implant Specialist
DSD - Digital Smile Design
TIMINGS :
10.00 am to 08.00pm

શ્રી પી. સી. જૈન
ચાર્ટર્ડ એકાઉન્ટન્ટની
છત્રછાયામાં ચાલતી...

દાંતના તમામ દર્દોનું
એકમાત્ર
સમાધાન સ્થળ એટલે...
ક્રીસ્ટલ
ડેન્ટલ કેર

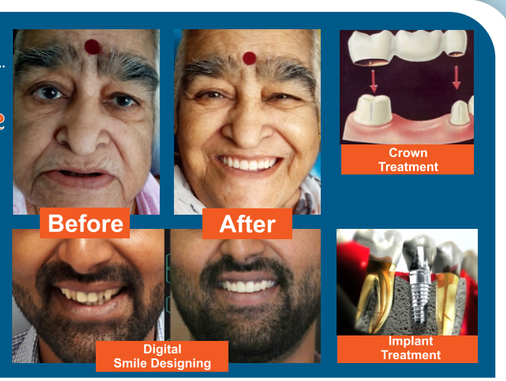

Consultant Prosthodontist
& Implantologist
- Maxillofacial Prosthetics
  - Cancer Rehabilitation
  - Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitations
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitations
- Crowns & Veneers
- Full & Partial Dentrures

WHAT WE DO:
- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com

मई : २०१७ सहयोग शुल्क : रु. १.०० अंक : ५

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

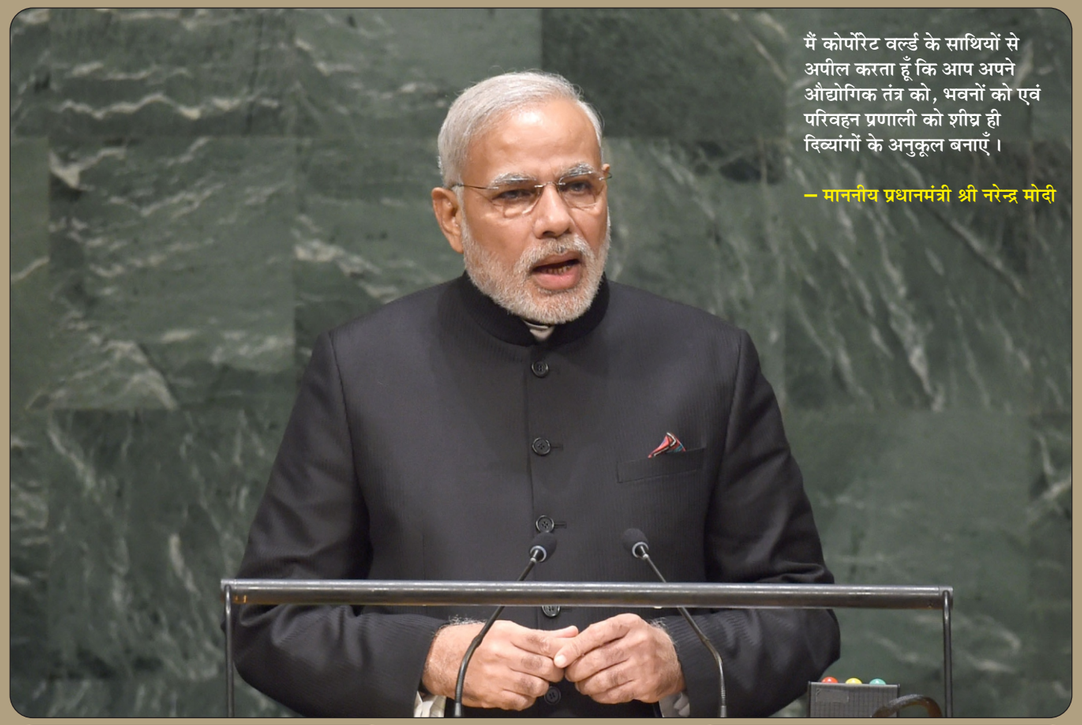

मैं कोर्पोरेट वर्ल्ड के साथियों से अपील करता हूँ कि आप अपने औद्योगिक तंत्र को, भवनों को एवं परिवहन प्रणाली को शीघ्र ही दिव्यांगों के अनुकूल बनाएँ ।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट सरकार के साथ सहयोग करते हुए दिव्यांगों को स्वरोजगार एवं आर्थिक स्वनिर्भरता देने के लिए कटिबद्ध है । - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
"માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા"

मैं चाहता हूँ कि भारत का हरेक दिव्यांग उच्च शिक्षा प्राप्त करे ।
– मनोहर पारिकर, गोवा के मुख्य मंत्री

निरामय हेल्थ पॉलिसी की
जानकारी देकर
फॉर्म भरते हुए
ॐकार फाउन्डेशन
ट्रस्ट के कार्यकर

केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु चलाई जा रही

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज़्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है। (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

- सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र
  (ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)
- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)
- उम्र का प्रमाण (वोटिंग कार्ड अथवा जन्म प्रमाण-पत्र अथवा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र)

यह प्रीमियम
ॐकार फाउन्डेशन
ट्रस्ट द्वारा
भरा जाएगा

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

प्रेरणास्त्रोत और संपादक :

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक :

मिहीरभाई शाह

M. : 9724181999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-७२, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास,

वासणा, अहमदाबाद.

मोबाईल : 9974955365,
9974955125

मुद्रक :

प्रिन्ट विजन प्रा.लि.

आंबावाडी बजार,

अहमदाबाद-६.

फोन : (079) 26405200

मई : २०१७

पृष्ठ संख्या : १६

वर्ष : ०१

अंक : ५

सहयोग शुल्क : रु. १/-

संपादकीय

किसी ने सच ही कहा है कि "किसी व्यक्ति की दिव्यांगता की वजह से उसकी उपेक्षा ना करें। आप शायद जानते नहीं कि वो आपको कितना प्रेरित कर सकता है।" और यह बात अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से बहुत से दिव्यांगों ने सही साबित कर दिखाई है। दिव्यांगता, ईश्वर द्वारा मानव को प्रदत्त एक अपूर्णता तो है, पर स्वयं में कई ऐसी पूर्णताएँ छिपाए हुए जिन्हें जाग्रत करने के लिए उन्हें हमारा थोड़ा सा प्यार एवं सहयोग चाहिए। यदि समग्र समाज एक होकर दिव्यांगों की उन्नति, प्रगति के लिए उन्हें राह दिखाने, उन्हें सहयोग करने को तत्पर हो तो दिव्यांग वह कार्य करके दिखा सकते हैं, जो शायद सामान्य मनुष्य के लिए भी अकल्पनीय हो

जीवन में हम बहुत सा समय धन कमाने में, खर्च करने में, सांसारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करने में, धर्म के अनुरूप जीने में तो व्यतीत करते हैं पर मानवता अथवा मानव सेवा के लिए नहीं। मानव होते हुए भी हम मानव सेवा को महत्व देना जरूरी नहीं समझते और यह अत्यंत दुःख की बात है। मैं समग्र समाज को 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका के माध्यम से यह कहना चाहता हूँ कि समाज के हर वर्ग, हर वर्ण, हर जाति के मनुष्य को स्वयं के धर्म एवं जातिगत भेदभावों को भुलाकर मानव सेवा जैसे पुनीत कार्य के लिए आगे आना चाहिए।

पत्रिका के इस अंक में एक रोग 'सेरेब्रल पाल्सी' के बारे में जानकारी के साथ ही दिव्यांगों के लिए कार्यरत इंदौर शहर की एक संस्था 'अरूणाभ' एवं उसके संस्थापक श्री आशीष कट्टी से हुई मुलाकात की चर्चा की जाएगी। ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट दिव्यांग सेवा के महान प्रकल्प में स्वयं की समग्र शक्ति एवं समग्र व्यवस्था को एकरूप करके दिव्यांगों के लिए कार्य करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है। इस अंक में आपको ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा इस दिशा में उठाए जा रहे छोटे किंतु महत्त्वपूर्ण कदमों की जानकारी भी दी जाएगी। आप सबका ऐसा ही सहयोग एवं सकारात्मक प्रतिभाव हमें मिलता रहे, ऐसी मेरी हृदय की भावना है।

समाज का विकास, दिव्यांगों के विकास के साथ ही जुड़ा हुआ है। जब जब भी मैं ऐसा कहता हूँ, तो उसके पीछे कहीं ना कहीं दिव्यांगों की प्रतिभा को पहचान मिले, स्वीकृति मिले ऐसी भावना होती है। समाज दिव्यांगों के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए उन्हें सशक्त स्थान दे एवं प्रत्येक मनुष्य इसे स्वीकृत करे, इसी भावना के साथ.....

विशेष : हमारी आपसे विनती है कि कृपया आपके क्षेत्र में दिव्यांगों के उत्थान के लिए कार्य कर रही संस्थाओं एवं व्यक्तियों के बारे में हमें लिख भेजें। हम अपनी पत्रिका के सशक्त माध्यम से चाहेंगे कि समाज ऐसी संस्थाओं एवं व्यक्तियों से प्रेरणा लेते हुए मानव सेवा के पथ पर अग्रसर हो।

- संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

विधानसभा

सत्यमेव जयते
गुजरात

રાકેશ શાહ

ધારાસભ્ય : એલિસબ્રીજ વિધાનસભા
ગુજરાત વિધાનસભા, ગાંધીનગર

" एक और हाथ दिव्यांजनो के साथ "

संदेश

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा "दिव्यांग सेतु" पत्रिका हिन्दी भाषा में प्रकाशित की जा रही है, यह एक सरहनीय और प्रशंसनीय कार्य है।

"दिव्यांग सेतु" पत्रिका दिव्यांगजनो ने किए हुए उत्कर्ष कार्यो एवम् भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्पनाकारी योजना और दिव्यांगजनो के लिए चलाई जा रही संस्थाओ की जानकारी प्रदान करती है।

दिव्यांगजनो की सेवा ही भगवान की सच्ची पुजा है। ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा "दिव्यांग सेतु" पत्रिका प्रकाशित करके एक और हाथ दिव्यांजनो के साथ बढाया है, में उनकी सच्चे दिल से प्रशंसा करता हुं।

में आशा करता हुं की यह पत्रिका सभी पाठकवर्ग के लिए उपयोगी रहेगी। इसी के साथ अभिनंदन एवं शुभेच्छा

आपका

राकेश शाह

To,
Shree Kinjal A. Shah, *Trustee,*
Omkar Foundation Trust (NGO),
E/72, Ayojannagar Society,
Nr. Jivraj Mehta Hospital & Shreyas Crossing,
Vasna, Ahmedabad – 380 007,
Email: omkarfoundationtrust@gmail.com

नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिव्यांग बालकों के लिए हिलस्टेशन ट्रिप

'मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन......'

बस इस उक्ति को सार्थक करते हुए मेमनगर, अहमदाबाद स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा २६ मानसिक रूप से दिव्यांग बालकों को १४,००० फुट ऊँचे हिमाचल स्थित हिलस्टेशन पर ले जाकर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया जाएगा। नवजीवन ट्रस्ट पिछले २५ वर्षों से मानसिक दिव्यांग बालकों को शिक्षण एवं प्रशिक्षण देकर उनके पुनर्वास का कार्य करता है। सेरेब्रल पाल्सी (मानसिक एवं शारीरिक दिव्यांग) तथा मानसिक रूप से दिव्यांग, ऐसे ८० से अधिक बालकों को ट्रस्ट दत्तक लेकर शिक्षा प्रदान करता है। इस हिलस्टेशन ट्रिप का आयोजन ट्रस्ट के रजत जयंती वर्ष को मनाने के लिए किया गया है। २५ मई से लेकर ३ जून तक २६ से अधिक दिव्यांग बालकों को इस ट्रिप पर ले जाया जाएगा। इन बालकों की देखभाल के लिए १४ स्पेशल टीचर्स एवं ४० से अधिक पेरेन्टस भी उनके साथ जाएँगे। मानसिक दिव्यांग बालकों के आनंद के लिए मनाली में ११,००० फुट की ऊँचाई पर स्थित वॉटर फॉल एवं १४,००० फुट की ऊँचाई पर स्थित रानीसूंई स्नोपॉइंट पर ले जाने के लिए संस्था का नाम 'इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' एवं 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में शामिल किया जाएगा। इसके पहले भी संस्था द्वारा मुंबई की फ्लाइट ट्रिप में दिव्यांग बालकों को ले जाने के लिए वर्ल्ड रिकार्ड बनाया जा चुका है।

अरूणाभ - विशेष बच्चों का प्रशिक्षण केन्द्र
अरूणाभ - संक्षिप्त परिचय

विशेष बच्चों की जिंदगी बेहतर बनाने के उद्देश्य से श्री देवी मातोश्री सामाजिक संस्थान द्वारा सन् २०११ में 'अरूणाभ' (विशेष बच्चों का प्रशिक्षण केन्द्र) की स्थापना की गई। अपने प्यार एवं देखभाल को विशेष बच्चों के साथ बाँटने की यह छोटी सी पहल (इसकी शुरूआत सिर्फ दो बच्चों के साथ हुई थी) आज एक बड़े से परिवार का रूप ले चुकी है, जिसकी खुशियाँ मापी नहीं जा सकती, सिर्फ महसूस की जा सकती हैं।

अरूणाभ की प्राथमिकता सदैव ही आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के बच्चों को संस्था के कार्य से लाभ मिले, ऐसी रही है। अत: आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के बच्चों के लिए संस्था द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था न्यूनतम शुल्क पर उपलब्ध है। इतना ही नहीं, संस्था की ८०% सीट आर्थिक रूप से कमज़ोर बच्चों के लिए प्राथमिक तौर पर उपलब्ध है।

अरूणाभ में स्लो लर्नर, मानसिक दिव्यांग बच्चों एवं ऑटिस्टिक बच्चों के प्रशिक्षण के लिए विशेष बुनियादी ढाँचा, सुविधाएँ एवं अनुभवी और योग्य स्टाफ है।

अरूणाभ में प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध माध्यम एवं सुविधाएँ :

- **स्पेशल एज्यूकेशन (विशेष शिक्षण) :** पुस्तकों, उपकरणों, कला एवं शिल्प, कलाएँ जैसे - संगीत, नृत्य, नाटिका, बाहरी गतिविधियों के माध्यम से जीवन कौशल एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण देना
- **औपचारिक शिक्षा :** नेशनल ओपन स्कूली शिक्षा, कम्प्यूटर ट्रेनिंग
- **OT / PT / ST :** हर बच्चे की जरूरत के अनुसार ऑक्यूपेशनल थैरेपी, फिज़ियोथैरेपी एवं स्पीच थैरेपी
- **म्यूज़िक थैरेपी :** एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें संगीत एवं उसके सभी पहलूओं (भौतिक, भावनात्मक, मानसिक, सामाजिक, सुंदरता एवं आध्यात्मिक) का बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **मंत्र थैरेपी :** अच्छे स्वास्थ्य के लिए मंत्रोच्चार के साथ मानसिक स्वस्थता के लिए ध्वनि तरंगों पर ध्यान केंद्रित करना।
- **व्यवसायिक प्रशिक्षण :** कैरियर संबंधी कार्यक्रमों जैसे पैतृक व्यवसाय में भागीदारी, विशिष्ट उद्योग आधारित प्रशिक्षण, निजी संस्थानों में कार्य अनुभव, रूपयों, बचत की उपयोगिता इत्यादि के बारे में जानकारी।
- **कौशल विकास :** रोजमर्रा की जरूरतें जैसे खाना बनाना, घर संभालना, परोसना इत्यादि की जानकारी। स्टेशनरी उत्पादन - ग्रीटिंग कार्डस, लिफाफे, फाइल फोल्डर्स इत्यादि बनाना। बागवानी, बुनाई इत्यादि के साथ कार्यालय कौशल्य जैसे टाईपिंग, डाटा एंट्री, फाईलिंग की जानकारी।
- **प्लेसमेंट सहायता :** कार्यस्थल प्रशिक्षण के माध्यम से प्लेसमेंट में सहायता एवं स्वरोजगार के माध्यम से आर्थिक स्वावलंबन के लिए प्रयास।

अरूणाभ - दिव्यांगता के उपचार पर शोध केन्द्र

शोध एवं तकनीक के माध्यम से उन्नत तरीकों एवं संसाधनों के उपयोग से प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षण की गुणवत्ता में निरंतर सुधार अरूणाभ का प्रयास रहा है। ASD मस्तिष्क संबंधी विकार, मानसिक रोगों पर सार्थक उपचार अरूणाभ के लिए शोध का प्राथमिक विषय रहा है। शोध कार्य के लिए की जा रही कुछ पद्धतियाँ निम्न है –

- **होम्योपैथी उपचार**

यह डॉ. प्रफुल्ल विजयकर (मुंबई) के मार्गदर्शन में चल रही पूर्वानुमानित होम्योपैथी पद्धति पर आधारित है। हर विषम महीने के पहले रविवार को अरूणाभ द्वारा ASD, CP, डाउन सिन्ड्रोम, मानसिक दिव्यांगता आदि से पीड़ित बच्चों के लिए एक नि:शुल्क मेडिकल केम्प का आयोजन किया जाता है।

अभी तक के लगाए गए केम्पों के बहुत सकारात्मक परिणाम मिले हैं जैसे बच्चों की लार टपकना कम हुई है, स्पीच डेवलप हुई है, गुस्सा कम हुआ है, फिट्स की निरंतरता में कमी हुई है।

- **मंत्रों द्वारा उपचार**

वरिष्ठ न्यूरोसर्जन एवं चिकित्सकों के सक्षम मार्गदर्शन में अरूणाभ द्वारा प्राचीन वैदिक मंत्रों के प्रभावों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य मानव मनोविज्ञान एवं पर्यावरण पर मंत्रों का प्रभाव एवं दिव्यांग होने के भौतिक कारणों के अतिरिक्त कारणों का पता लगाना है।

- **संगीत द्वारा उपचार**

एक वैकल्पिक उपचार पद्धति के रूप में संगीत का योगदान - यह भी अरूणाभ में किए जा रहे शोधों में से एक विषय है। इसकी शुरूआत २ अप्रैल, २०१६ को शास्त्रीय गायक श्री भुवनेश कोमकली के कार्यक्रम द्वारा की गई। वर्तमान में अरूणाभ में हाइपर एक्टिव बच्चों एवं बोलने में कठिनाई वाले बच्चों के उपचार के उद्देश्य से संगीत की नियमित कक्षाएँ ली जाती हैं।

ऑटिज़्म एवं अन्य मानसिक असंतुलनों के बारे में जागरुकता बढ़ाना 'अरूणाभ' के मुख्य उद्देश्यों में से एक है। ऐसा देखा गया है कि इन रोगों के बारे में सही समय पर सही जानकारी उपलब्ध ना होना एवं उसके प्रति जागरूक ना होना ही मुश्किलों को बढ़ावा देता है। सही समय पर इलाज उपलब्ध होने पर ऐसे बच्चों को जल्दी ही मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से अरूणाभ द्वारा पूरे वर्ष दौरान अलग-अलग कार्यक्रमों के आयोजनों के अलावा २ अप्रैल, विश्व ऑटिज़्म जागरूकता दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम 'अनहद', जिसके अंतर्गत इंटर स्कूल स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक संध्या, नुक्कड़ नाटक एवं चैरिटी शोज़, साईकिल एवं मोटर साईकिल रैलीज़ का आयोजन किया जाता है।

आप भी 'अरूणाभ' से जुड़ सकते हैं –

- वार्षिक सदस्य बनकर (शुल्क रू. २,०००/-)
- एक बच्चे का वार्षिक खर्चा उठाकर (रू. ७,५००/-)
- १ रू प्रतिदिन पूरे वर्ष - रू. ३६५ (परिवहन सुविधा हेतु)
- या विभिन्न आयोजनों हेतु प्रायोजक के स्वरूप में

अरूणाभ का पता है –

अरूणाभ (विशेष बच्चों का प्रशिक्षण केन्द्र)
पहली मंज़िल, ४३ टेलीफोन नगर, कनाड़िया रोड, इंदौर (म.प्र.)
फोन : 0931-2593120, मो. : 9425057243, 9425190720
E-mail : arunabhaashish@gmail.com

एक मुलाकात : श्री आशीष कट्टी से

इस बार अपने इंदौर प्रवास के दौरान मुझे ऑटिस्टिक एवं मानसिक दिव्यांगता वाले बच्चों के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रही संस्था 'अरूणाभ' में जाने का अवसर मिला, जहाँ मैंने अरूणाभ के संस्थापक एवं समन्वयक श्री आशीष कट्टी से मुलाकात की। बहुत ही सहज एवं सुलझे हुए व्यक्तित्व के मालिक श्री कट्टी यूँ तो पेशे से कृषि सलाहकार है, परंतु आज ऐसे बच्चों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना ही उनका ध्येय है। उनके अनुसार महत्वपूर्ण ये नहीं है कि आप इन बच्चों को क्या सिखाना चाहते है बल्कि यह है कि ऐसे बच्चे क्या सीख सकते हैं।

पिछले ६-७ वर्षों से इसी पुनीत कार्य से जुड़े श्री कट्टी, मंदबुद्धि, ऑटिज़्म आदि मानसिक दिव्यांगताओं के कारण एवं उपचार पर आधुनिक विज्ञान, भारतीय अध्यात्म, योग, ध्यान एवं संगीत के समायोजन के साथ अनेक प्रकार के प्रयोग एवं शोध भी कर रहे हैं। उनके अनुसार यदि इन बीमारियों के होने के कारणों की जड़ तक पहुँचा जाए, तो उनका निदान भी संभव है।

उनके द्वारा किए जा रहे प्रयोगों एवं शोध की दिशा में उठाए जा रहे अनेक कदमों में से एक है – मंत्र चिकित्सा। उन्होंने अपने यहाँ आ रहे बच्चों में से ५ बच्चों को चुना है जिन्हें नियमित रूप से कुछ मंत्र सुनाए जाते हैं। उसी आईक्यू स्तर वाले दूसरे बच्चों से तुलना करने पर उन्होंने पाया कि मंत्र सुनने वाले बच्चों में काफी सकारात्मक परिवर्तन आए। मंत्र चिकित्सा के अलावा दूसरी थैरेपीज़ जैसे स्पीच थैरेपी, ऑक्यूपेशनल थैरेपी इत्यादि तो सभी बच्चों के लिए समान ही थीं। इस सकारात्मक परिवर्तन का पता उन्हें संस्था द्वारा दिव्यांगों के लिए आयोजित किए गए एक यज्ञ के दौरान चला। यज्ञ में पूरे इंदौर के करीब १८० दिव्यांग बच्चे मौजूद थे। दूसरे बच्चे तो यज्ञ में ८ से १० आहुतियाँ ही दे रहे थे पर इन पाँचों बच्चों को पूरे डेढ़ घंटे तक वहाँ बैठाकर रखा गया। इस यज्ञ के करीब एक हफ्ते पहले विशेष हॉस्पिटल के न्यूरोसर्जन डॉ. बसंत डाकवाले के द्वारा इन पाँचों बच्चों का ई ई जी किया गया था और यज्ञ के तुरंत बाद भी इन बच्चों का फिर से ई ई जी किया गया। पाँच में से तीन बच्चों में तो कोई विशेष परिवर्तन नहीं पाया गया परंतु दो बच्चों में उल्लेखनीय परिवर्तन पाया गया। श्री कट्टी के अनुसार परिणाम क्या होगा, उसकी जानकारी तो अभी तक नहीं है पर इस दिशा में शोध चालू है।

संगीत द्वारा थैरेपी पर भी उनके यहाँ शोध कार्य चालू है और इसके लिए वो सिर्फ भारतीय शास्त्रीय संगीत ही नहीं वरन पाश्चात्य संगीत का भी उपयोग करते हैं। इसी के अंतर्गत पिछले वर्ष ऑटिज़्म जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत उन्होंने प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक श्री भुवनेश कोमकली का गायन कार्यक्रम भी आयोजित किया।

श्री कट्टी के अनुसार अभी तक इस दिशा में जितने भी शोध अथवा प्रयोग हुए हैं, सब पश्चिम में ही हुए हैं पर उनकी भी अपनी सीमाएँ हैं। इसीलिए वो इस क्षेत्र में भारतीय विधाओं का भी पूरी तरह अन्वेषण करना चाहते हैं। प्रारब्ध में विश्वास रखने वाले श्री कट्टी पालकों की अनुमति से ऐसे बच्चों को Past Life Regression Therapy भी देते हैं। अब उन्होंने नेचरोपैथी द्वारा भी इन बच्चों के इलाज के लिए प्रयोग शुरु किए हैं और इसके काफी सकारात्मक परिणाम भी उन्होंने पाए हैं। उनके यहाँ बच्चों को मौखिक रूप से कोई दवाई नहीं दी जाती, वरन थैरेपीज़ द्वारा ही उनका इलाज किया जाता है।

श्री कट्टी के अनुसार यदि एक बच्चा इस तरह का हो तो उसका असर उसके पूरे परिवार पर पड़ता है। वो अकेला ही उस पीड़ा को नहीं सहता बल्कि कहा जाए तो पीड़ा वो नहीं, उसका परिवार सहता है क्योंकि उस बच्चे को तो स्वयं की पीड़ा का कुछ बोध है ही नहीं। उसके लिए तो जैसे हम सामान्य लोगों की इच्छाएँ हैं, उसकी भी हैं। इच्छाएँ पूरी होने पर उसे भी हमारी तरह ही खुशी होती है और ना पूरी होने पर दुख भी। तो व्यक्तिगत स्तर पर तो शायद हममें और ऐसे बच्चों में कोई फर्क होता ही नहीं। बस अंतर इतना ही है कि अपना ध्यान रखने के लिए हम दूसरों पर निर्भर नहीं और दूसरों पर निर्भरता उनकी सबसे बड़ समस्या है।

सरकार एवं समाज द्वारा अपेक्षित सहयोग ना मिलने पर भी श्री कट्टी के इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों में किसी भी तरह की कमी नहीं है। वो बच्चों में पाई जाने वाली ऐसी दिव्यांगताओं के होने की वज़ह की जड़ तक पहुँचना चाहते हैं। इस दिशा में अपने एवं संस्था द्वारा किए जा रहे विभिन्न शोधों एवं प्रयोगों से उन्हें विश्वास है कि एक न एक दिन वो ऐसे बच्चों की ज़िन्दगी में अवश्य ही सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे।

श्री कट्टी एवं उनके जैसे ही दिव्यांग सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले व्यक्तियों को नमन .....।

— ज्योति मोलासरिया धुप्पड़

CEREBRAL PALSY (मस्तिष्क पक्षाघात)

मस्तिष्क पक्षाघात या सेरेब्रल पाल्सी –

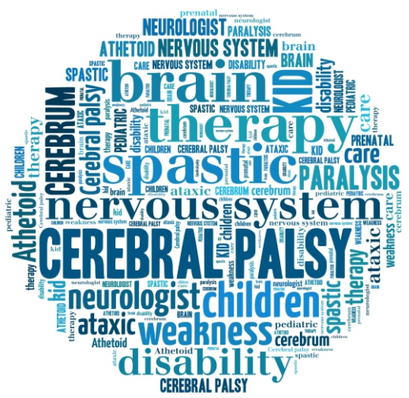

क्या आपने अपने परिवार के किसी सदस्य को आपके द्वारा उठाए गए पहले कदम अथवा तो आपके द्वारा बोले गए पहले शब्द के बारे में बात करते सुना है ? आपका जवाब अवश्य 'हाँ' में ही होगा। परंतु सेरेब्रल पाल्सी, जिसे शॉर्ट में CP कहा जाता है, से ग्रसित बच्चों के लिए पहला कदम उठाना अथवा तो पहला शब्द कहना शायद उतना आसान नहीं होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि CP एक ऐसी अवस्था है जो उन बच्चों द्वारा रोजमर्रा की ज़िन्दगी में किए जाने वाले कार्यों को प्रभावित करती है।

सेरेब्रल का अर्थ है मस्तिष्क के दोनों भाग तथा पाल्सी का अर्थ किसी ऐसी असामान्यता या क्षति से है, जो शारीरिक गति के नियंत्रण को क्षतिग्रस्त करती है। १९वीं सदी के एक प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक विलियम लिट्स ने बच्चों में पाई जाने वाली असामान्यता से संबंधित चिकित्सा की चर्चा की थी, जिसमें हाथ एवं पैर की माँसपेशियों में कड़ापन पाया जाता है। ऐसे बच्चों को वस्तु पकड़ने में एवं चलने में कठिनाई होती है। इसे लंबे समय तक लिट्स रोग के नाम से जाना गया और अब इसे मस्तिष्कीय पक्षाघात कहते हैं यानि मस्तिष्क का लकवा।

यह मस्तिष्कीय क्षति बच्चों को जन्म के पहले, जन्म के समय अथवा जन्म के बाद, कभी भी हो सकती है। क्षति के अनुपात में ही बच्चों में हुई दिव्यांगता की गंभीरता होती है। यह बीमारी मुख्यत: गर्भधारण (७५ प्रतिशत), बच्चे के जन्म के समय लगभग (५ प्रतिशत) एवं तीन वर्ष की आयु तक के बच्चों को होती है। यह कोई छूत की बीमारी नहीं है। इस बीमारी की वजह से संचार में समस्या, संवेदना, पूर्व धारणा, वस्तुओं को पहचानना एवं अन्य व्यवहारिक समस्याएँ आती हैं।

संभावित कारण :

इस रोग का मुख्य कारण तो बच्चे के मस्तिष्क के विकास में व्यवधान आना या चोट लगना है। कुछ अन्य कारण इस प्रकार हैं –

- गर्भावस्था के दौरान माँ को संक्रमण। रूबेला (जर्मन मीज़ल्स), साइटोमेगलोवाइरस (एक हल्का वाइरल संक्रमण) और टोक्सोप्लास्मोसिस (एक हलका परजीवीय संक्रमण) मस्तिष्क की क्षति का कारण बन सकते हैं और इनके फलस्वरूप सेरेब्रल पाल्सी हो सकती है।
- भ्रूण तक पहुँचने वाली अपर्याप्त ऑक्सीजन।
- माँ के गर्भ में बच्चे का अस्वाभाविक आनुवांशिक विकास।
- नवजात शिशु का पीलिया या अन्य किसी संक्रमण से ग्रस्त होना।
- हासिल की हुई सेरेब्रल पाल्सी। लगभग १०% बच्चे इसे जन्म के बाद मस्तिष्क की उन चोटों की वजह से प्राप्त करते हैं जो कि जीवन के पहले दो वर्षों मे लगती हैं। इस प्रकार की चोटों का सर्वाधिक आम कारण मस्तिष्क के संक्रमण (जैसे कि मेनिनजाइटिस) और सिर की चोटें होती हैं।

शीघ्र पहचान :

मस्तिष्कीय पक्षाघात की शीघ्र पहचान के लिए इसके शुरूआती लक्षणों को पहचानना अति आवश्यक है। लक्षणों को पहचानकर ही इसका उपचार एवं रोकथाम हेतु कदम उठाना संभव है। इसके कुछ लक्षण इस प्रकार हैं –

- बच्चा जन्म के समय देर से रोता है या साँस लेता है।
- जन्म के समय मस्तिष्कीय पक्षाघात ग्रसित शिशु प्राय: शिथिल या निर्जीव जैसा तथा लचीला एवं पतला होता है। यदि शिशु को छाती की तरफ पकड़कर औंधे मुँह लटकाया जाए तो शिशु उल्टे यू (U) जैसा झुक जाएगा।
- दूसरे सामान्य बच्चे की तुलना धीमा विकास।
- गर्दन नियंत्रण एवं बैठने में देर करता है।
- अपने दोनों हाथों का एक साथ प्रयोग नहीं कर पाता है।
- शिशु स्तनपान में असमर्थता दिखाता है।
- गोद में लेते समय, कपड़े पहनाते अथवा नहाते समय शिशु का शरीर अकड़ जाता है।
- होंठ से लार टपकाता है।
- बच्चे बहुत उदास दिखते हैं एवं सुस्त गति वाले होते हैं।

उपरोक्त लक्षणों के पाए जाने पर डॉक्टर एमआरआई (मैग्नेटिक रिसोनैंस इमेजिंग), सीटी स्कैन (कंप्यूटेड टोमोग्राफी) या अल्ट्रासाउंड जैसे ब्रेन-इमेजिंग परीक्षणों का सुझाव भी दे सकता है। यह परीक्षण कई बार CP के कारण की पहचान करने में सहायता कर सकते हैं।

वर्गीकरण :

इसे मुख्यत: तीन आधार पर वर्गीकृत किया गया है –

(१) तीव्रता के प्रमाण के अनुसार,
(२) प्रभावित अंगों की संख्या के अनुसार एवं
(३) चिकित्सीय लक्षणों के अनुसार

(१) तीव्रता के प्रमाण के अनुसार :

(a) अति अल्प मस्तिष्कीय पक्षाघात (Mild Cerebral Palsy)

इसमें गामक* एवं शरीर स्थिति से संबंधित दिव्यांगता न्यूनतम होती है। बच्चे को सीखने में समस्याएँ हो सकती हैं पर वह पूरी तरह स्वतंत्र होता है। इस श्रेणी के बच्चे सामान्य विद्यालय में सम्मिलित शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं।

(b) अल्प मस्तिष्कीय पक्षाघात (Moderate Cerebral Palsy)

इसमें गामक एवं शरीर स्थिति से संबंधित दिव्यांगता का प्रभाव अधिक होता है। इस श्रेणी के बच्चों के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है एवं उपकरणों की मदद से बच्चा बहुत हद तक स्वतंत्र हो सकता है।

(c) गंभीर मस्तिष्क पक्षाघात (Severe Cerebral Palsy)

इसमें गामक एवं शरीर स्थिति से संबंधित दिव्यांगता पूर्णत: होती है। इस श्रेणी के बच्चों को अपनी नित्य क्रियाओं के लिए भी दूसरों पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

(२) प्रभावित अंगों की संख्या के अनुसार वर्गीकरण

शरीर का कौन सा भाग अथवा हाथ-पैर प्रभावित हैं, इसके आधार पर भी मस्तिष्कीय पक्षाघात को मुख्यत: पाँच भागों में बाँटा गया है –

(a) मोनोप्लेजिया (Monoplegia)

इसमें व्यक्ति का कोई एक हाथ या पैर प्रभावित होता है।

(b) हेमीप्लेजिया (Hemiplegia)

इसमें एक ही तरफ के हाथ और पैर दोनों प्रभावित होते हैं।

(c) डायप्लेजिया (Diaplegia)

इसमें ज्यादातर दोनों पैर प्रभावित होते हैं, परंतु कभी-कभी हाथ में भी इसका प्रभाव दिखता है।

(d) पैराप्लेजिया (Paraplegia)

इसके अंतर्गत व्यक्ति के दोनों पैर प्रभावित होते हैं।

(e) क्वाड्रीप्लेजिया (Quadriplegia)

इसके अंतर्गत दोनों हाथ एवं दोनों पैर अर्थात् शरीर का पूरा भाग प्रभावित रहता है।

(३) चिकित्सीय लक्षणों के अनुसार वर्गीकरण

इसके आधार पर मस्तिष्कीय पक्षाघात को चार भागों में बाँटा गया है –

(a) स्पासटीसिटी (Spasticity)

इसका अर्थ है कड़ी अथवा तनी हुई माँसपेशी। इसमें गति बढ़ने के साथ माँसपेशीय तनाव भी बढ़ता है। क्रोध अथवा उत्तेजना की स्थिति में भी माँसपेशीय कड़ापन और बढ़ जाता है। पीठ के बल लेटने पर बच्चे का सर एक तरफ घूम जाता है तथा पैर अंदर की ओर मुड़ जाता है। स्पास्टिक सेरेब्ल पाल्सी सबसे आम है। ७०% से ८०% मामले इसी के पाए जाते हैं।

(b) एथेटोसिस (Athetosis)

एथेटोसिस का अर्थ है अनियमित गति। माँसपेशीय तनाव सामान्य होता है। शरीर की गति के साथ तनाव बढ़ता है। बच्चा जब अपनी इच्छा से कोई अंग संचालित करता है तो उसका शरीर तड़फड़ाने लगता है। एथिऑइड की समस्या में व्यक्ति को सीधा खड़ा होने, बैठने में परेशानी होती है। रोगी किसी भी चीज़ को जैसे टूथब्रश, पेंसिल इत्यादि को भी ठीक से नहीं पकड़ पाता है।

(c) एटेक्सिया (Atexia)

इसका अर्थ है अस्थिर एवं अनियंत्रित गति। इसमें बच्चे का शारीरिक संतुलन खराब होता है। ऐसे बच्चे बैठने या खड़े होने पर गिर जाते हैं। इनका माँसपेशीय तनाव कम होता है। चलते वक्त भी उसे संतुलन बनाने में बहुत दिक्कत आती है। इस स्थिति में व्यक्ति को लिखने में समस्या होती है। साथ ही किसी किसी की दृश्य एवं श्रवण शक्ति पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

एटाक्सिक सेरेब्ल पाल्सी की समस्या १०% लोगों में देखी गई है। भारत में लगभग २५ लाख बच्चे इस समस्या के शिकार हैं।

(d) मिक्स्ड (Mixed)

उपरोक्त तीनों के लक्षण जब किसी बच्चे में मिलेजुले हुए दिखते हैं, तो वो मिश्रित प्रकार के मस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रसित कहलाता है।

उपचार :

अभी तक इस बीमारी की कोई कारगर दवा नहीं बनी है। वर्तमान चिकित्सा एवं उपचार अभी तक इस रोग और इसके दुष्प्रभाव के बारे में कोई ठोस परिणाम नहीं दे पाए हैं।

इसमें बच्चे की बीमारी की गंभीरता एवं जरूरतों को पहचानते हुए उपचार दिया जाता है। स्वास्थ्यचर्या पेशेवरों की एक टीम जिसमें बालरोग विशेषज्ञ, भौतिक मेडिसिन एवं पुनर्वास चिकित्सक, आर्थोपेडिक सर्जन, फिज़िकल एंड ऑक्यूपेशनल थैरेपिस्ट, नेत्ररोग विशेषज्ञ, भाषा विज्ञानी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं मनोवैज्ञानिक इस उपचार के कार्य में शामिल हो सकते हैं।

अभी कुछ समय पूर्व ही इलाहाबाद के एक डॉ. जितेन्द्र कुमार जैन एवं उनकी टीम ने ओएसएससीएस नामक थैरेपी का पूर्वोत्तर भारत के एक स्पास्टिक CP से ग्रस्त बच्चे पर पहली बार प्रयोग किया है। उनके अनुसार इससे बच्चे न केवल अपने पैरों पर खड़े हो पाएँगे, बल्कि दौड़ भी पाएँगे।

*गामक : स्नायुमंडल तथा माँसपेशियों की क्रियाओं के समीकरण द्वारा जो शारीरिक क्रियाकलाप जैसे हाथ-पैर हिलाना डुलाना, गर्दन हिलाना, आँख की पुतलियाँ तथा अन्य अंग चलाना संभव हो सकता है, उन्हें गामक क्रियाएँ कहते हैं।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के लिए की गई सेवाकीय प्रवृत्तियाँ

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के उत्थान के लिए उठाए जा रहे कदमों की कड़ी में इस महीने....

- ४६५ दिव्यांगों को निरामय पॉलिसी प्रदान की गई, जिनका प्रीमियम संस्था द्वारा भरा गया।
- ११६ दिव्यांगों को दिव्यांग पहचान पत्र मिले।
- गुजरात सरकार द्वारा चलाई जा रही साधन सहाय योजना के अंतर्गत सहायता प्राप्त करने के लिए संस्था द्वारा १३० दिव्यांगों के फॉर्म भरे गए।
- ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से दि. ११-५-१७ से नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण शुरू किया गया। इस प्रशिक्षण केन्द्र (ॐकार कम्प्यूटर क्लास) का उद्घाटन प.पू. संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई द्वारा अनेक गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में किया गया। अभी करीब २०-२५ दिव्यांग वहाँ कम्प्यूटर का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर आप भी दिव्यांगों की मदद के पुनीत कार्य में सहभागी बन सकते हैं।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं

Title - 2 रू. १०,०००/-
Title - 3 रू. १०,०००/-
Title - 4 रू. १०,०००/-
आधा पेज - रू. ५,०००/-

विज्ञापन से प्राप्त समस्त राशि दिव्यांग कल्याणकारी योजनाओं में खर्च की जाएँगी।

दिव्यांग शक्ति सम्मान

उन्नत भारत सोश्यल वेलफेयर सोसायटी द्वारा दि. २१-५-२०१७ को नयी दिल्ली के कॉंस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में शारीरिक रूप से अक्षम अर्थात दिव्यांग व्यक्तियों के लिए दिव्यांग शक्ति सम्मान का आयोजन किया गया। बाबू जगजीवनराम राष्ट्रीय प्रतिष्ठान की मदद से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य उन दिव्यांगों का सम्मान करना था, जो अपने कार्यों के द्वारा समाज के अन्य दिव्यांगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री श्री विजय सांपला एवं मुख्य वक्ता भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू थे। कई गणमान्य व्यक्ति जैसे उन्नत भारत के अध्यक्ष अभिषेक मिश्र, बाबू जगजीवनराम राष्ट्रीय प्रतिष्ठान की उपाध्यक्ष श्रीमती स्वाति कुमार और कोषाध्यक्ष श्री संजय निर्मल, पूर्व विधायक श्री विनोदकुमार बिन्नी, विकलांगता अधिकार के मुख्य आयुक्त डॉ. संजयकांत प्रसाद, भाजपा नेता श्री संदीप दुबे, नेत्रम से डॉ. अंचल गुप्ता, ट्री फॉर लाइफ के कविता, अशोक और स्वामी विशालानंद जी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री श्री विजय सांपला ने सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्थान के लिए उठाए जा रहे कदमों की जानकारी दी।

समारोह में सम्मानित हुए दिव्यांगों में शिक्षिका दर्शना, दिव्यांग सहारा समिति के कपिल अग्रवाल एवं सोनू भोला, बैंक के कार्यरत एवं अंतर्राष्ट्रीय शूटिंग में रजत पदक विजेता पूजा अग्रवाल, सामाजिक संस्था के लिए रिंकू वर्मा, नमिता भल्ला, नरेंद्र अग्रवाल, नृत्य में प्रमोद और खेल के क्षेत्र से रवि चौहान, अंशुल एवं जोगिन्दर सिंह थे।

इस मौके पर कार्यक्रम के आयोजक अभिषेक मिश्र ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांगों को लगातार अच्छे कार्यों से जुड़े रहने की प्रेरणा मिले, यह है और इस हेतु लगातार इस तरह के आयोजन उन्नत भारत द्वारा किए जाते रहेंगे। कार्यक्रम में सहभागिता अखिलेश कुमार, रिमझिम श्रीवास्तव, सत्तन शर्मा, अंबुज कुमार एवं अन्य ने दी।

संस्था का नाम :-

संस्था का पता :-

संस्था का प्रश्न :-

mail ID :-

मोबाइल नंबर :-

लेन्डलाइन नंबर :-

आप अपनी संस्था में दिव्यांग बालकों द्वारा फुल स्केप पेज में चित्र बनवाकर हमारी संस्था में भेज सकते हैं। इन चित्रो में प्रथम तीन चित्रों को हमारी संस्था की और से पुरस्कृत किया जाएगा.जिसकी जानकारी अगले अंक में प्रकाशित होगी। प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 30 जून 2017

प्रथम - रु. १५००/-

द्वितीय - रु.१०००/-

एवं तृतीय रु.५००/-

चित्र के पीछे की ओर दिव्यांग बालक/बालिका/व्यक्ति का नाम, संस्था का पूरा नाम, संस्था का पता, लेन्डलाइन नंबर अथवा/एवं मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

किसी भी संस्था की ओर से दिव्यांगो के प्रति किसी भी प्रकार की सलाह, उनकी तकलीफें, उनसे संबंधित प्रश्नों, उनके लिए किए गए कार्यक्रम, उनके विकास के लिए किए गए अच्छे कार्यों की जानकारी इत्यादि हमारी पत्रिका में निःशुल्क छापी जाएगी।